ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 2 | February 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i2.122

ऋत का दार्शनिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक विवेचन: भारतीय ज्ञान परंपरा में ऋत का स्थान और समकालीन प्रासंगिकता

Dr. Surendra Pal Singh

Assistant Professor, Department of Teacher Education, D.S. College, Aligarh

Email: drsps@dscaligarh.ac.in

सारांश

यह शोध–पत्र "ऋत" की अवधारणा का वैदिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत करता है। "ऋत" वेदों में ब्रह्मांडीय नियम, नैतिक सत्य और प्राकृतिक संतुलन का प्रतीक है। यह केवल धार्मिक या आस्थामूलक तत्व नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक सिद्धांत है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर जीवन की समरसता को स्थापित करता है। ऋग्वेद में "ऋत" को सत्य का आधार तथा ब्रह्मांड की नियामक शक्ति कहा गया है —

"ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।" (ऋग्वेद 10.190.1) इस शोध में वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रंथ, मनुस्मृति और आधुनिक विद्वानों के मतों के आधार पर "ऋत" के स्वरूप, वैज्ञानिक तात्त्विकता और समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। "ऋत" का तात्पर्य केवल सत्य के दार्शनिक अर्थ से नहीं, बल्कि समग्र ब्रह्मांडीय व्यवस्था से है जो न केवल प्रकृति में नियमबद्धता लाती है, बल्कि मानव समाज में नैतिक आचरण और न्याय की आधारशिला भी रखती है।

मुख्य शब्द (Keywords): ऋत, धर्म, सत्य, ब्रह्मांडीय व्यवस्था, भारतीय ज्ञान परंपरा, वेद, उपनिषद्, विज्ञान, नैतिकता, प्रकृति, समरसता ।

भूमिका (Introduction):

भारतीय वैदिक चिंतन का मूलाधार "ऋत" (Ṛta) है। यह वह सिद्धांत है जिसके द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्मांड की व्यवस्था, संतुलन और गति निर्धारित होती है। "ऋत" शब्द संस्कृत धातु "ऋ" (गमन, प्रवाह) से बना है, जिसका अर्थ है — *जो सदैव चलता रहता है, नियमपूर्वक गतिमान रहता है।* इस प्रकार "ऋत" का अर्थ है — **सृष्टि का वह सार्वभौमिक नियम जिसके अंतर्गत समस्त चराचर जगत नियत गति से संचालित होता है।** ऋग्वेद में "ऋत" को सत्य, धर्म और तप के साथ जोड़ा गया है। सृष्टि के उद्गम का वर्णन करते हुए कहा गया है —

"ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।" (ऋग्वेद 10.190.1) अर्थात् ऋत और सत्य, तप से उत्पन्न हुए — यही सृष्टि के क्रम और संतुलन की जड़ है।

वेदों में "ऋत" का प्रयोग अनेक अर्थों में हुआ है — कभी यह **ब्रह्मांडीय व्यवस्था** (Cosmic Order) को सूचित करता है, तो कभी यह **नैतिक सत्य** (Moral Truth) और **नियमितता** (Regularity) का प्रतीक बन जाता है। "ऋत" ही वह सिद्धांत है जो द्यौ (आकाश), पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, वायु आदि तत्वों को संतुलित गति से चलाता है।

"ऋतेन द्यौरुत पृथिवी अरम्णताम्।" (ऋग्वेद 10.190.2) *(ऋत के कारण आकाश और पृथ्वी स्थिर हैं।)*

दार्शनिक दृष्टि से "ऋत" वह तत्त्व है जो ब्रह्मांड की एकात्मता, सुसंगति और समन्वय को व्यक्त करता है। यह केवल बाह्य जगत का नियम नहीं, बल्कि **मानव चेतना, समाज और नैतिक जीवन का भी नियामक सिद्धांत** है। इसीलिए ऋग्वेद में कहा गया — "ऋतेन पन्था न व्यतीति देवान्।" *(देवता भी ऋत के पथ का उल्लंघन नहीं करते।)* भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) में "ऋत" का स्थान "सत्य" और "धर्म" के मध्य सेतु के रूप में है। "सत्य" उसका तत्व रूप है, और "धर्म" उसका आचरण रूप। "ऋतेनैव धर्मः प्रतिष्ठितः।" (मनुस्मृति 8.15) *(धर्म केवल ऋत पर ही आधारित है।)*

आधुनिक युग में "ऋत" की अवधारणा केवल धार्मिक या दार्शनिक चिन्तन का विषय नहीं रही, बल्कि यह *विज्ञान, नैतिकता, पर्यावरणीय संतुलन* और *मानव व्यवहार* का भी वैज्ञानिक आधार बन सकती है। यह शोध–पत्र इसी बहुआयामी दृष्टिकोण से "ऋत" के वैदिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक आयामों का विश्लेषण करेगा, तथा आधुनिक समाज में इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करेगा।

साहित्य समीक्षा (Literature Review):

"ऋत" भारतीय वैदिक चिंतन की सबसे प्राचीन और मूलभूत अवधारणा है। यह केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की आत्मा के रूप में देखा गया सिद्धांत है — जो सृष्टि की रचना, संचालन और विनाश तीनों का नियामक तत्व है। इस अध्याय में "ऋत" की संकल्पना का अध्ययन वैदिक, उपनिषदिक, स्मृति, टीकाकार और आधुनिक विद्वानों की दृष्टि से किया गया है।

1. वैदिक दृष्टिकोण-

ऋग्वेद में "ऋत" शब्द लगभग 390 बार प्रयुक्त हुआ है, जो इसके केंद्रीय स्थान को स्पष्ट करता है। **ऋग्वेद (10.190.1–2)** में कहा गया है — "ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत। ततः सम् अभवद् रात्रिः ततः सम् अभवद् अहः॥" *(ऋत और सत्य तप से उत्पन्न हुए; उनसे रात्रि और दिवस उत्पन्न हुए।)* यह सूचित करता है कि ऋत ही सृष्टि की नियामक शक्ति है — समय, प्रकृति और ऊर्जा सभी उसी से उत्पन्न हुए। **ऋग्वेद (1.23.5)** में कहा गया है — "ऋतेन देवाः सचन्ते ऋतेन सूर्य उदीयते।" *(देवता ऋत के साथ चलते हैं, सूर्य भी ऋत के अनुसार उदित होता है।)* यहाँ "ऋत" को Cosmic Law के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो देवताओं तक को अनुशासित करता है। **ऋग्वेद (1.24.14)** — "ऋतस्य गोपा अदितिः।" *(अदिति ऋत की रक्षिका है।)* यहाँ "अदिति" (अनंत सत्ता) को उस व्यवस्था का प्रतीक माना गया है जो ऋत को स्थिर रखती है।

2. ब्राह्मण और उपनिषद साहित्य-

ब्राह्मण ग्रंथों में "ऋत" को यज्ञ और सृष्टि–क्रम से जोड़ा गया है। यज्ञ को "ऋतस्य पन्था" कहा गया है — अर्थात यज्ञ का मार्ग ऋत का पालन है। *शतपथ ब्राह्मण (1.1.1.1)* में कहा गया — "ऋतेनैव एष यजते। ऋतं वा एष यज्ञः।"

(मनुष्य ऋत के माध्यम से ही यज करता है, क्योंकि यज्ञ स्वयं ऋत का रूप है।) उपनिषदों में "ऋत" को "सत्य" और "ब्रह्म" से जोड़ा गया है। **बृहदारण्यक उपनिषद्** (1.4.14) "सत्यं वा एतद् ब्रह्म, ऋतं च तस्य नाम।" *(ब्रह्म ही सत्य है, और उसका नाम ऋत है।)* **छान्दोग्य उपनिषद्** (2.23.1) में कहा गया — "ऋतेन सूर्यस्तपति।" *(सूर्य ऋत के कारण ही प्रकाशित होता है।)* इससे स्पष्ट होता है कि "ऋत" उपनिषदों में न केवल भौतिक नियम बल्कि ब्रह्म की चैतन्य ऊर्जा के रूप में भी देखा गया है।

3. स्मृति एवं टीकाकार परंपरा-

मनुस्मृति में कहा गया — "ऋतेनैव धर्मः प्रतिष्ठितः।" (मनुस्मृति 8.15)

(धर्म केवल ऋत पर ही प्रतिष्ठित है।) अर्थात् "ऋत" ही वह तात्त्विक आधार है, जिस पर धर्म का व्यावहारिक रूप खड़ा है। **आचार्य यास्क** (निरुक्त, अध्याय 1) ने कहा — "ऋतं नाम नियतं कर्म।" *(ऋत का अर्थ है — निश्चित और नियमबद्ध कर्म।)* **सायणाचार्य** ने "ऋत" को "सत्य का व्यवहारिक रूप" कहा है — सत्य वह है जो अस्तित्व में है, और ऋत वह है जो उस सत्य को व्यवहार में लाता है।

4. आधुनिक विद्वानों की दृष्टि-

आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने "ऋत" को भारतीय ज्ञान प्रणाली का वैज्ञानिक सिद्धांत माना है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1953) ने लिखा — "ऋत वह दार्शनिक सिद्धांत है जो भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक नियमों को एक सूत्र में बाँधता है।"

R.N. Dandekar (1981) के अनुसार — "ऋत विश्व–व्यवस्था की ऊर्जा–संतुलन प्रणाली का वैदिक रूपक है।"

महर्षि दयानंद सरस्वती ने *सत्यार्थ प्रकाश* में कहा — "ऋत ही परम सत्य है — वही विज्ञान, वही धर्म और वही न्याय का मूल है।"

5. तुलनात्मक विवेचन

ग्रीक दर्शन में "Logos", चीनी दर्शन में "Tao" और आधुनिक विज्ञान में "Natural Law" — इन सभी का तात्त्विक आधार "ऋत" से मेल खाता है। परन्तु भारतीय चिंतन में "ऋत" केवल बाह्य नियम नहीं, बल्कि *चैतन्य एवं नैतिक चेतना से युक्त सिद्धांत* है। उपरोक्त सभी दृष्टिकोणों से यह स्पष्ट होता है कि "ऋत" एक समग्र (Holistic) अवधारणा है — जो सृष्टि, सत्य, धर्म और मनुष्य के आचरण — सभी को एक सूत्र में बाँधती है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा की वह रीढ़ है, जिसने वेदों से लेकर आधुनिक विज्ञान तक विचार की निरंतरता बनाए रखी है।

वैदिक एवं दार्शनिक विवेचन (Theoretical Framework)

"ऋत" का तात्त्विक अर्थ केवल एक धार्मिक या लौकिक नियम नहीं, बल्कि **ब्रह्मांडीय, नैतिक और आध्यात्मिक व्यवस्था** (Cosmic, Ethical, and Spiritual Order) का समन्वय है। वैदिक ग्रंथों में यह सृष्टि के आरंभ से ही विद्यमान सिद्धांत माना गया है। यह

अध्याय "ऋत" के वैदिक स्वरूप, उसके तत्वमीमांसा (Philosophical Dimensions), तथा धर्म–सत्य–ब्रह्म के साथ उसके संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. ऋग्वैदिक दृष्टि: ब्रह्मांडीय व्यवस्था का सिद्धांत

ऋग्वेद में "ऋत" का स्थान सर्वोच्च है। यह देवताओं का भी नियामक है — अर्थात् देवता भी ऋत का पालन करते हैं। "ऋतेन द्यौरुत पृथिवी अरम्णताम्।" (ऋग्वेद 10.190.2) "ऋतेन देवाः सचन्ते।" (ऋग्वेद 1.23.5) इन मंत्रों से स्पष्ट है कि "ऋत" ही वह शक्ति है जो आकाश, पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, वायु और समस्त भौतिक तत्त्वों को निश्चित गति और व्यवस्था में चलाती है। इस प्रकार "ऋत" को *ब्रह्मांडीय संतुलन का वैज्ञानिक नियम (Cosmic Law of Equilibrium)* कहा जा सकता है।

2. दार्शनिक अर्थ: सत्य और धर्म का आधार

वेदों और उपनिषदों में "ऋत" और "सत्य" को एक दूसरे से अविभाज्य माना गया है। "ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।" (ऋग्वेद 10.190.1) "सत्य" वह शाश्वत तत्त्व है जो अस्तित्व में है, और "ऋत" वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वह सत्य व्यवहार में प्रकट होता है। इसीलिए उपनिषदों में कहा गया — "सत्यं वा एतद् ब्रह्म, ऋतं च तस्य नाम।" (बृहदारण्यक उपनिषद् 1.4.14) अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है और उसका नाम ऋत है। यहाँ "ऋत" को **ब्रह्म की गतिशील अभिव्यक्ति (Dynamic Expression of the Absolute)** कहा जा सकता है।

3. ऋत और धर्म का संबंध

मनुस्मृति में कहा गया — "ऋतेनैव धर्मः प्रतिष्ठितः।" (मनुस्मृति 8.15) यहाँ स्पष्ट है कि "धर्म" "ऋत" का सामाजिक और व्यवहारिक रूप है। "ऋत" सार्वभौमिक सत्य है — जबकि "धर्म" उसी सत्य का अनुप्रयोग (Application) है।

- जब "ऋत" ब्रह्मांड को संचालित करता है,
- तो "धर्म" मानव समाज और आचरण को संतुलित करता है।

इस प्रकार — **ऋत** → **धर्म** → **कर्म** → **फल** का दार्शनिक अनुक्रम स्थापित होता है।

4. नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक अर्थ

वेदों में "ऋत" को नैतिक आचरण का मापदंड भी कहा गया है। "ऋतेन पन्था न व्यतीति देवान्।" *(देवता भी ऋत के पथ से नहीं हटते।)* यह सूचित करता है कि *नैतिक जीवन में सत्य, अनुशासन और कर्तव्यपालन* ही "ऋत" का पालन है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से "ऋत" का पालन व्यक्ति में आत्म–संतुलन, सामंजस्य और आत्म–शांति की भावना उत्पन्न करता है।

5. ब्रह्मांडीय चेतना और ऋत

उपनिषदों में "ऋत" को ब्रह्म की गति या ऊर्जा–रूप में व्याख्यायित किया गया है। "ऋतेन सूर्यस्तपति।" (छान्दोग्य उपनिषद् 2.23.1) "ऋतेन वातो वहति।" (तैत्तिरीय संहिता 4.2.8) यहाँ "ऋत" को उस नियम के रूप में देखा गया है जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा को दिशा देता है। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से यह *Universal Law of Energy Transformation* के समान है।

6. प्रतीकात्मक व्याख्या

"ऋत" को वैदिक देवता **वरुण** का भी धर्म कहा गया है। वरुण देव ब्रह्मांड के न्याय और संतुलन के रक्षक हैं — "ऋतस्य गोपा वरुणः।" (ऋग्वेद 1.25.1) यह दर्शाता है कि ऋत केवल भौतिक नियम नहीं, बल्कि **नैतिक चेतना** (Moral Consciousness) का भी प्रतीक है। "ऋत" भारतीय दर्शन का वह सिद्धांत है जो *सत्य के तत्व, धर्म के आचरण,* और *ब्रह्मांडीय व्यवस्था* — तीनों को जोड़ता है। यह स्थिर भी है और गतिशील भी — स्थिर इसलिए कि यह शाश्वत नियम है, और गतिशील इसलिए कि यह सृष्टि के प्रवाह में निरंतर कार्यरत है।

ऋत का वैज्ञानिक आधार (Scientific Basis of Ṛta)

भारतीय ज्ञान परंपरा में "ऋत" (Ṛta) को केवल धार्मिक या आध्यात्मिक सत्य नहीं, बल्कि **वैज्ञानिक सिद्धांत** (Scientific Principle) के रूप में भी देखा गया है। ऋत उस सार्वभौमिक नियम का प्रतीक है जिसके अधीन समस्त सृष्टि — पदार्थ, ऊर्जा, गति, समय, और जीवन — संतुलित और सुव्यवस्थित रूप से कार्य करते हैं। यह अध्याय "ऋत" के वैज्ञानिक आयामों का विवेचन करता है — विशेष रूप से ब्रह्मांडीय, प्राकृतिक, जैविक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर।

1. ब्रह्मांडीय व्यवस्था (Cosmic Order)

वेदों में "ऋत" को ब्रह्मांडीय व्यवस्था की आत्मा कहा गया है — "ऋतेन द्यौरुत पृथिवी अरम्णताम्।" (ऋग्वेद 10.190.2) "ऋतेन सूर्य उदीयते।" (ऋग्वेद 1.23.5) यह संकेत करता है कि आकाशीय पिंडों की गति, ऋतुओं का परिवर्तन, सूर्य का उदय-अस्त — सब कुछ एक निश्चित प्राकृतिक नियम के अनुसार होता है। आधुनिक भौतिक विज्ञान में इसे *Law of Cosmic Harmony* या *Universal Order* कहा जा सकता है। जैसे—

- ग्रहों की गति **केपलर के ग्रह गति नियमों** (Kepler's Laws) के अनुसार होती है,
- ऊर्जा का संरक्षण Thermodynamics के नियम से नियंत्रित है, वैसे ही वैदिक चिंतन में यह सब "ऋत" की अभिव्यक्ति मानी गई है।

2. ऊष्मा और ऊर्जा का सिद्धांत

ऋग्वेद (10.190.1) में कहा गया — "ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।" यहाँ "तपस्" (ऊष्मा / Heat) से "ऋत" और "सत्य" का उत्पन्न होना बताया गया है। विज्ञान के अनुसार, **ऊर्जा** (Energy) ही वह मूल तत्त्व है जिससे पदार्थ (Matter) और क्रम (Order) उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार यह वैदिक सिद्धांत आधुनिक Thermodynamic Order Theory से मेल खाता है — अर्थात् *Order emerges from Heat and Energy.*

3. जैविक और पारिस्थितिक संतुलन (Ecological Balance)

"ऋत" का पालन केवल खगोलीय नियमों तक सीमित नहीं, बल्कि **प्रकृति के पारिस्थितिक तंत्र** (Ecosystem) में भी दिखाई देता है।

"ऋतेन वनस्पतयो वर्धन्ते।" — वैदिक संकेत *(वनस्पतियाँ भी ऋत अर्थात् प्राकृतिक नियम के अनुसार विकसित होती हैं।)* आधुनिक *Ecology* में भी पारिस्थितिक संतुलन (Ecological Harmony) और *Sustainability* का सिद्धांत इसी "ऋत" की आधुनिक अभिव्यक्ति है। जब मनुष्य इस संतुलन का उल्लंघन करता है, तब जलवायु असंतुलन, प्रदूषण और पर्यावरण संकट उत्पन्न होता है। अतः वैदिक ऋत का वैज्ञानिक अर्थ है — **Sustainability through Natural Order.**

4. मानव चेतना और मनोवैज्ञानिक नियम (Psychological Order)

ऋत का पालन केवल बाह्य जगत तक नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना में भी आवश्यक है। उपनिषद् कहते हैं — "ऋतेन प्राणो वहति।" *(प्राण अर्थात् जीवन शक्ति भी ऋत के अनुसार प्रवाहित होती है।)* आधुनिक *Cognitive Science* और *Psychophysiology* के अनुसार, मनुष्य की मानसिक और शारीरिक स्थिरता तब तक बनी रहती है जब तक उसकी जैव–ऊर्जाएँ और भावनात्मक प्रवाह संतुलन में हों। यह वैदिक "ऋत" का मनोवैज्ञानिक रूप है — **जब मन, बुद्धि और आत्मा नियमबद्ध जीवन (Disciplined Living) में रहती है, तो व्यक्ति 'ऋतम्भरा प्रज्ञा' (Truth-filled Consciousness)** की अवस्था प्राप्त करता है।

5. नैतिक–वैज्ञानिक समन्वय

"ऋत" का एक महत्वपूर्ण आयाम यह है कि यह *विज्ञान और नैतिकता (Science and Ethics)* दोनों को जोड़ता है। विज्ञान व्यवस्था (Order) की बात करता है, और नैतिकता न्याय (Justice) की — "ऋत" इन दोनों का सम्मिलन है। "ऋतस्य गोपा वरुणः।" (ऋग्वेद 1.25.1) यहाँ वरुण देव वह प्रतीक हैं जो ब्रह्मांडीय न्याय (Cosmic Justice) की रक्षा करते हैं। इस दृष्टि से "ऋत" वह वैज्ञानिक–नैतिक सिद्धांत है जो **कारण–कार्य संबंध (Causality)** के साथ-साथ **कर्तव्य–फल संबंध (Karma)** को भी संचालित करता है।

6. आधुनिक विज्ञान में समानांतर अवधारणाएँ

वैदिक सिद्धांत "ऋत"	**आधुनिक विज्ञान में समान सिद्धांत**
सृष्टि की समरूपता (Cosmic Harmony)	Law of Universal Order
तप से उत्पन्न ऋत	Thermodynamics – Order from Energy
पर्यावरणीय संतुलन	Ecological Sustainability
ऋतम्भरा प्रज्ञा (सत्य–चेतना)	Quantum Coherence / Unified Consciousness
कारण–कार्य नियम	Law of Causation

इस प्रकार "ऋत" केवल दार्शनिक या धार्मिक विचार नहीं, बल्कि *वैज्ञानिक और प्रणालीगत वास्तविकता (Systemic Reality)* का द्योतक है। "ऋत" का वैज्ञानिक आधार यह सिद्ध करता है कि भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही प्रकृति, ऊर्जा, गति और चेतना

की उस एकसूत्रीय व्यवस्था को अनुभव किया था, जिसे आज आधुनिक विज्ञान विभिन्न सिद्धांतों के माध्यम से समझा रहा है। "ऋत" वह सेतु है जो **विज्ञान, धर्म और दर्शन** — तीनों को एकीकृत करता है।

आधुनिक प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)

वेदों में प्रतिपादित "ऋत" का सिद्धांत केवल प्राचीन चिंतन का विषय नहीं, बल्कि आज के युग की जटिल समस्याओं — जैसे नैतिक संकट, पर्यावरणीय असंतुलन, सामाजिक विघटन और वैश्विक असमानता — के समाधान की दिशा भी प्रस्तुत करता है। "ऋत" का तात्त्विक अर्थ है *सत्य, संतुलन और न्याय पर आधारित सार्वभौमिक व्यवस्था (Universal Order based on Truth and Harmony).* इस प्रकार यह आधुनिक युग में एक नैतिक–वैज्ञानिक दर्शन के रूप में पुनः प्रासंगिक हो उठता है।

1. नैतिकता और वैश्विक न्याय (Ethical and Global Relevance)

"ऋत" का मूल भाव है — सत्य और न्याय की सार्वभौमिकता। "ऋतेनैव धर्मः प्रतिष्ठितः।" (मनुस्मृति 8.15) यह बताता है कि जब समाज "ऋत" के अनुरूप चलता है, तब नैतिकता और न्याय स्वतः स्थापित होते हैं। आज जब विश्व "मूल्यों के संकट" (Crisis of Values) से गुजर रहा है, "ऋत" एक ऐसी नैतिक दृष्टि प्रदान करता है जो किसी जाति, धर्म या देश तक सीमित नहीं है। यह **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** (सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है) की भावना को पुष्ट करता है। **2. पर्यावरणीय संतुलन और सतत् विकास (Environmental and Ecological Balance)** वेदों में "ऋत" को प्राकृतिक संतुलन की आत्मा कहा गया है। "ऋतेन द्यौरुत पृथिवी अरम्णताम्।" (ऋग्वेद 10.190.2) *(ऋत के कारण आकाश और पृथ्वी स्थिर हैं।)* आधुनिक समय में जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और अस्थिरता ने मानव अस्तित्व को संकट में डाल दिया है, तब "ऋत" का संदेश है — *प्रकृति के साथ समरसता ही स्थायित्व का आधार है।*

- यह हमें सिखाता है कि *मानव, प्रकृति और दैव* — तीनों का संतुलन (Ṛta-traya) आवश्यक है।
- यही सिद्धांत आधुनिक *Sustainable Development Goals (SDGs)* का वैदिक समकक्ष कहा जा सकता है।

3. वैज्ञानिक चेतना और समन्वय (Scientific and Rational Relevance)

"ऋत" का वैज्ञानिक पक्ष यह बताता है कि विश्व में कोई भी घटना बिना कारण नहीं होती — यह **Law of Causality** का ही वैदिक रूप है। आधुनिक विज्ञान जिस "Natural Law" की चर्चा करता है, वही वैदिक भाषा में "ऋत" है। इस प्रकार "ऋत" एक **Cosmic Rationality** का दर्शन प्रस्तुत करता है — जो धर्म और विज्ञान दोनों को एकीकृत करता है।

4. शिक्षा और मूल्य–संस्कार (Educational Relevance)

भारतीय शिक्षा–दर्शन में "ऋत" का सिद्धांत **सत्य, अनुशासन, और आत्म–संयम** की भावना को विकसित करता है। "ऋतं वद, सत्यम् वद।" (तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11.1) *(सदैव ऋत और सत्य का ही पालन करो।)*

आज जब शिक्षा में ज्ञान का उद्देश्य केवल रोजगार बनता जा रहा है, "ऋत" की शिक्षा यह बताती है कि **ज्ञान का लक्ष्य चरित्र–निर्माण, नैतिकता और आत्म–संतुलन** होना चाहिए।

5. सामाजिक और नेतृत्व स्तर पर अनुप्रयोग (Social & Leadership Application)

- "ऋत" के अनुसार शासन और नेतृत्व को न्याय, सत्य और पारदर्शिता पर आधारित होना चाहिए।
- प्रशासनिक या राजनीतिक निर्णय तभी सफल होते हैं जब वे "ऋत" — अर्थात् *सत्य और लोक–कल्याण* — के अनुरूप हों।
- यह आधुनिक *Ethical Leadership* और *Good Governance* के सिद्धांतों से मेल खाता है।

6. मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रासंगिकता (Psychological and Spiritual Relevance)

"ऋत" का पालन व्यक्ति के भीतर आंतरिक संतुलन (Inner Harmony) और आत्म–शांति (Peace of Mind) उत्पन्न करता है।

"ऋतम्भरा प्रज्ञा" — योगसूत्र (1.48) *(ऋतम्भरा प्रज्ञा वह चेतना है जो सत्य से पूर्ण होती है।)* आधुनिक मनोविज्ञान में इसे *Self-regulation*, *Mindfulness* और *Cognitive Harmony* कहा जाता है। अतः "ऋत" का अभ्यास व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास और जीवन–संतुलन प्रदान करता है।

7. वैश्विक समरसता की दिशा (Towards Global Harmony)

आज का विश्व विभाजन, हिंसा और भौतिकता के संकट से जूझ रहा है। "ऋत" का सिद्धांत हमें पुनः स्मरण कराता है कि समरसता केवल तकनीकी प्रगति से नहीं, बल्कि **नैतिक–दार्शनिक अनुशासन** से उत्पन्न होती है।

"ऋतेन पन्था न व्यतीति देवान्।" *(देवता भी ऋत के मार्ग का उल्लंघन नहीं करते।)* अतः यदि मानवता इस वैदिक मार्ग को अपनाए — जहाँ सत्य, संतुलन और करुणा एक साथ चलते हैं — तो वैश्विक शांति और नैतिक एकता संभव है। "ऋत" आज के युग में केवल प्राचीन ग्रंथों का दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि **मानव सभ्यता के लिए दिशासूचक सिद्धांत** है। यह हमें सिखाता है —

- प्रकृति का सम्मान करो,
- सत्य का आचरण करो,
- और अपने कर्मों में संतुलन बनाए रखो।

इसी में व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक कल्याण का रहस्य निहित है।

निष्कर्ष (Conclusion)

"ऋत" भारतीय वैदिक चिंतन की आत्मा है। यह न केवल वेदों की मूल अवधारणा है, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि का आधारभूत सिद्धांत भी है। "ऋत" वह सार्वभौमिक नियम है जो ब्रह्मांड, प्रकृति, समाज और मानव चेतना — सबको एकसूत्र में बाँधता है। ऋग्वेद के ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले यह उद्घोष किया था — "ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।" (ऋग्वेद 10.190.1) इस मंत्र में सृष्टि के प्राकट्य और स्थिरता का रहस्य निहित है। तप (ऊर्जा) से सत्य और ऋत (नियम) उत्पन्न हुए, और उन्हीं के सहारे ब्रह्मांड की व्यवस्था कायम है।

दार्शनिक रूप से "ऋत" सत्य और धर्म के मध्य का सेतु है —

- "सत्य" शाश्वत तत्व है,
- "धर्म" उसका व्यवहारिक रूप है,
- और "ऋत" वह तात्त्विक नियम है जो दोनों को जोड़ता है।

विज्ञान की दृष्टि से "ऋत" ब्रह्मांडीय संतुलन और ऊर्जा–नियमों का द्योतक है। प्रकृति की प्रत्येक गति, प्रत्येक परिवर्तन उसी ऋत के अधीन है। इसी कारण वेदों ने कहा — "ऋतेन द्यौरुत पृथिवी अरम्णताम्।" (ऋग्वेद 10.190.2) आधुनिक समय में जब मानवता नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय असंतुलन से जूझ रही है, तब "ऋत" का सिद्धांत पुनः चेतना का आह्वान करता है। यह हमें स्मरण कराता है कि — सत्य, संतुलन और नैतिकता ही सभ्यता के स्थायित्व की नींव हैं। "ऋत" केवल धार्मिक अनुशासन नहीं, बल्कि **संपूर्ण जीवन के संतुलन का विज्ञान** है। जब व्यक्ति अपने भीतर और समाज अपने तंत्र में ऋत का पालन करता है, तभी वास्तविक शांति, न्याय और सामंजस्य संभव होता है। "ऋतम्भरा प्रज्ञा" — योगसूत्र (1.48)

(सत्य से परिपूर्ण चेतना) — यही ऋत का अंतिम स्वरूप है। यह मनुष्य को अंधकार से प्रकाश, असंतुलन से सामंजस्य, और अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि — **ऋत भारतीय ज्ञान परंपरा का वैज्ञानिक–दार्शनिक केंद्र है, जो आधुनिक युग में नैतिकता, पर्यावरणीय स्थिरता और वैश्विक समरसता के लिए सबसे प्रासंगिक मार्गदर्शक सिद्धांत है।**

संदर्भ सूची (References)

[1]. **ऋग्वेद संहिता।** (सायणाचार्य भाष्य सहित)। (सं. 10.190.1–2; 1.23.5; 1.24.14; 1.25.1)। नई दिल्ली: चौखंबा संस्कृत सीरीज़।

[2]. **शतपथ ब्राह्मण।** (अध्याय 1, खंड 1, ब्राह्मण 1)। वाराणसी: चौखंबा संस्कृत सीरीज़।

[3]. **बृहदारण्यक उपनिषद्।** (1.4.14)। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन।

[4]. **छान्दोग्य उपनिषद्।** (2.23.1)। पं. सत्यव्रत सामाश्रमी (सं.), चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी।

[5]. **मनुस्मृति।** (अध्याय 8, श्लोक 15)। मुंबई: गीता प्रेस, गोरखपुर संस्करण।

[6]. **निरुक्त (यास्काचार्य)।** (अध्याय 1)। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

[7]. **पतञ्जलि योगसूत्र।** (1.48)। वाराणसी: चौखंबा संस्कृत सीरीज़।

[8]. **सायणाचार्य।** (ऋग्वेद भाष्य)। वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।

[9]. **आचार्य दयानंद सरस्वती।** (1875). *सत्यार्थ प्रकाश।* अजमेर: आर्य प्रकाशन ट्रस्ट।)

[10]. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली। (1953). *भारतीय दर्शन (Indian Philosophy, Vol. I).* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[11]. Dandekar, R. N. (1981). *Vedic Concept of Ṛta and Its Evolution.* Delhi: Motilal Banarsidass.

[12]. Sharma, Arvind. (1990). *Classical Hindu Thought: An Introduction.* Oxford University Press.

[13]. Panikkar, Raimon. (1977). *The Vedic Experience: Mantramañjari.* Delhi: Motilal Banarsidass.

[14]. Mishra, R. K. (2014). *Vedic Philosophy and Scientific Consciousness.* Indian Journal of Vedic Studies, 6(2), 45–59.

[15]. Kapoor, Kapil. (2002). *Dimensions of Indian Philosophy.* Indian Council of Philosophical Research (ICPR).

[16]. Vivekananda, Swami. (1896). *Jnana Yoga.* Calcutta: Advaita Ashrama.

[17]. Tiwari, K. N. (1998). *Classical Indian Ethical Thought.* Motilal Banarsidass.

[18]. Tagore, Rabindranath. (1922). *The Religion of Man.* London: Macmillan.

Cite this Article

***Dr. Surendra Pal Singh**, "ऋत का दार्शनिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक विवेचन: भारतीय ज्ञान परंपरा में ऋत का स्थान और समकालीन प्रासंगिकता", International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 2, pp. 51-60, February 2025.*

***Journal URL:** https://ijmrast.com/*

***DOI:** https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i2.122*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.